प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

जहां सत्य को उजागर करने के लिए कष्ट उठाया जाता है, वहां अंततः सत्य की ही जीत होती है...
- जॉर्ज वाशिंगटन

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति

प्रधानमंत्री मोदी लगातार जिस तरह से आतंकवाद का मुद्दा उठा रहे हैं, उससे साफ है कि आने वाले चरणों में एनडीए राष्ट्रीय सुरक्षा को ही मुद्दा बनाएगा। विपक्ष की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह इस कथानक को कितना बदल पाता है।

तीसरे चरण के बाद

सत्रहवीं लोकसभा के चुनाव के तीसरे और सबसे बड़े चरण में 117 सीटों पर मतदान होने के साथ ही दक्षिण के पांच राज्यों में चुनाव अभियान खत्म हो गया है। इन पांच राज्यों में से तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में पहले और दूसरे चरण में मतदान हो चुका था और तीसरे चरण में केरल और कर्नाटक की बाकी सीटों पर मतदान संपन्न हो गया। इनके अलावा छत्तीसगढ़ और गुजरात में भी इस चरण के साथ मतदान संपन्न हो गया। जाहिर है, राजनीतिक दलों का प्रचार अभियान अब बाकी के चार चरणों में महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और पंजाब के साथ ही हिंदी पट्टी के उन राज्यों पर केंद्रित हो जाएगा, जिसने 2014 में नरेंद्र मोदी की अगुआई में एनडीए को सत्ता दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। दक्षिण में कर्नाटक को छोड़कर भाजपा की खास मौजूदगी नहीं रही है, लेकिन इस बार उसने तमिलनाडु में जहां अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन किया, वहीं केरल में सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश के मुद्दे के जरिये ध्रुवीकरण की कोशिश की है। मगर कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के वायनाड से चुनाव लड़ने से केरल का चुनाव दिलचस्प हो गया है, जो कि माकपा का आखिरी गढ़ रह गया है। प्रधानमंत्री मोदी का गृह राज्य गुजरात भाजपा का गढ़ है, जहां उसने पिछली बार पूरी 26 सीटें जीती थीं। मगर 2017 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए उसके समक्ष कड़ी चुनौती पेश की थी, लिहाजा यह देखने वाली बात होगी कि क्या वह भाजपा को किसी तरह का नुकसान पहुंचाने में सफल होती है। इस चुनाव में भारी मतदान के बावजूद पश्चिम बंगाल चुनाव आयोग के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण बनकर उभरा है, जहां मुर्शीदाबाद में हुई हिंसा में एक व्यक्ति की मौत हो गई। यह वह राज्य है, जहां भाजपा उत्तर भारत में होने वाले संभावित नुकसान की भरपाई करना चाहती है, तो ममता अपना यह गढ़ बचाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ना चाहतीं। दरअसल उत्तर प्रदेश का गणित इस बार बदल गया है, जहां सपा, बसपा और रालोद ने गठबंधन किया है, जिससे भाजपा को अनेक सीटों पर सीधी चुनौती मिल रही है। प्रधानमंत्री मोदी लगातार जिस तरह से आतंकवाद का मुद्दा उठा रहे हैं, उससे साफ है कि आने वाले चरणों में एनडीए राष्ट्रीय सुरक्षा को ही मुद्दा बनाएगा। विपक्ष की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह इस कथानक को कितना बदल पाता है।

उत्तर तलाशता दक्षिण

इस बार केंद्र में सरकार बनाने की इच्छुक किसी भी पार्टी के लिए दक्षिण भारत के पांच राज्यों में हुए लोकसभा चुनाव का नतीजा अहम रहेगा।

नारायण कृष्णमूर्ति, वरिष्ठ पत्रकार

बड़े राजनीतिक कटआउट, रंगीन मालाएं, पार्टी कार्यकर्ताओं की मजबूत फौज और नेताओं व उम्मीदवारों के चुनावी भाषणों का उन्माद हमेशा से दक्षिण भारत की सियासत में हावी रहा है। हालांकि इस बार अतीत के कुछ अवसरों की तरह पांच राज्यों और तीन केंद्र शासित प्रदेश की 132 लोकसभा सीटों का नतीजा यह तय करेगा कि 23 मई को कौन-सी पार्टी सत्ता में आएगी। इस क्षेत्र में किसी एक भाषा का प्रतिनिधित्व नहीं है और कई वर्षों से यह क्षेत्र क्षेत्रीय पार्टियों के किसी राष्ट्रीय पार्टी के गठजोड़ के माध्यम से केंद्र में अपने प्रतिनिधि भेजता रहा है या अपने हितों के लिए चुनाव बाद गठबंधन में यहां की क्षेत्रीय पार्टियां शामिल होती रही हैं।

इन 132 सीटों की भूमिका तब महत्वपूर्ण हो जाएगी, जब किसी पार्टी या गठबंधन को स्पष्ट बहुमत न मिलने पर यह फैसला करने का अवसर आएगा कि कौन-सी पार्टी केंद्र में शासन करेगी। वर्ष 2004 और 2009 के चुनावों के बाद जब यूपीए सत्ता में आई थी, तब दक्षिण भारत ने ही उनकी मदद की थी। यहां तक कि जब अटल बिहारी वाजपेयी ने 1999 में पूर्ण कालिक शासन के लिए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) बनाया, तो सहयोगी चंद्रबाबू नायडू की तेलुगू देशम पार्टी ने 29 सीटें और उस समय एनडीए में शामिल द्रमुक ने 26 सीटें जीती थी।

लेकिन इस बार इन पांच राज्यों में काफी कुछ बदल गया है। राज्य विभाजन के बाद तेलंगाना और आंध्र प्रदेश ने क्षेत्रीय दलों की गतिशीलता को बदल दिया है। तमिलनाडु में दशकों बाद पहली बार अन्नाद्रमुक और द्रमुक अपने पूर्ववर्ती शीर्ष नेताओं- जे. जयललिता और एम. करुणानिधि के बगैर चुनाव में उतरी है। तमिलनाडु में भाजपा अन्नाद्रमुक के नेतृत्व में हुए आठ दलों के गठबंधन में शामिल है। जमीनी स्तर पर इस गठबंधन के लिए बहुत कम आकर्षण है।

सत्ता में होने के बावजूद अन्नाद्रमुक राज्य में पहचान के संकट से गुजर रही है, क्योंकि पार्टी में बिखराव और कई सदस्यों के पार्टी लाइन से अलग चलने के कारण उसके पास कमजोर बहुमत है। राज्य में उसकी सरकार इसलिए बची हुई है, क्योंकि उसने केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा के साथ गठजोड़ किया हुआ है, वर्ना राज्य में विधानसभा भंग होने या राष्ट्रपति शासन लगने की आशंका ज्यादा है। दो बड़े फिल्म अभिनेताओं के राजनीति में प्रवेश ने भी राज्य की प्रमुख पार्टियों के लिए राह उतनी आसान नहीं रहने दी है।

आंध्र प्रदेश में चंद्रबाबू नायडू की तेदेपा, जगन मोहन रेड्डी की वाईआरएस कांग्रेस, टीआरएस और भाजपा के अलावा कुछ अन्य क्षेत्रीय दल चुनावी मैदान में हैं। वास्तव में एनडीए की पूर्व सहयोगी तेदेपा को एक से अधिक पार्टियों से प्रतिस्पर्धा के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। तथ्य यह है कि नायडू उन लोगों में शामिल हैं, जिन्होंने मोदी विरोधी विचार पैदा किया, जो चुनाव के बाद की स्थितियों में उनके लिए फायदेमंद होगा, अगर वह विजेता बनकर उभरे, अन्यथा यह उनके राजनीतिक वर्चस्व का अंत साबित हो सकता है, क्योंकि विभाजन के बाद राज्य की सीटों में कमी आई है।

इन राज्यों में से तेलंगाना में स्पष्ट नतीजा आ सकता है, जहां विधानसभा चुनाव में जीत के बाद टीआरएस के के. चंद्रशेखर राव सत्ता में हैं। यही नहीं, वह अन्य पार्टियों के लिए भी अकेली चुनौती बनकर उभरे हैं। वह केंद्र में गैर-कांग्रेस, गैर-भाजपा सरकार के लिए भी मुखर रहे हैं और उन्होंने ममता बनर्जी से भी इस संबंध में बात की थी। वाईएसआर कांग्रेस, तेदेपा और कांग्रेस द्वारा कड़ी टक्कर देने के बावजूद राज्य विधानसभा चुनाव में केसीआर ने अपनी पकड़ बनाए रखी।

वायनाड में राहुल गांधी द्वारा नामांकन भरने से केरल के प्रति राष्ट्रीय दिलचस्पी बढ़ गई है। केरल इस क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य है, पर राजनीतिक रूप से यह विविधतापूर्ण है। इसे समझने के लिए आपको यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) और लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (एलडीएफ) में शामिल पार्टियों की संख्या देखने की जरूरत है। जहां यूडीएफ छह पार्टियों का गठबंधन है, वहीं एलडीएफ 14 पार्टियों का गठबंधन है। हालांकि दोनों गठबंधनों के बीच ज्यादातर सीटों पर आमने-सामने का मुकाबला है।

कर्नाटक दक्षिण भारत का अकेला राज्य है, जहां भाजपा का महत्वपूर्ण दखल है। राज्य की 28 लोकसभा सीटों में से भाजपा को 2014 में 17 सीटें मिली थीं। कॉस्मोपोलिटन प्रकृति के बावजूद कर्नाटक वास्तव में लिंगायत और वोक्कालिगा की जातिगत पहचान पर निर्भर है। लिंगायत का प्रतिनिधित्व भाजपा के वरिष्ठ नेता बीएस येदियुरप्पा करते रहे हैं, जबकि वोक्कालिगा का गौड़ा। कुरुबाओं, पिछड़ी जातियों और मुसलमानों के कारण समीकरण काफी बदल जाते हैं। फिर भी यह अकेला दक्षिणी राज्य है, जहां भाजपा का कुछ दखल है और वह सरकार चलाने में भी कामयाब रही है। हालांकि हाल ही में दिवंगत हुए अनंत कुमार की अनुपस्थिति में राज्य में भाजपा की उतनी पकड़ नहीं है, जितनी वह चाहती है। अगर राज्य के हालिया चुनावों को देखें, तो भाजपा बढ़त में नहीं है। प्रताप सिम्हा और तेजस्वी सूर्या जैसे युवा नेताओं को शामिल करने से भाजपा को बड़ी सफलता मिलने की संभावना नहीं है।

अगर अंडमान, लक्षद्वीप और पुड्डुचेरी की एक-एक सीटों को भी जोड़ लें, तो कोई भी सहयोगी दल शासन करने या विपक्ष में रहने के लिए नहीं है। दक्षिण के राज्यों में से प्रत्येक में एक राज्य विशेष की पार्टी मैदान में है। उनमें से कुछ गठबंधन में शामिल हैं और कुछ नतीजों के बाद सरकार गठन में अपनी भूमिका निभाएंगे।

भाजपा को 2014 में उत्तर प्रदेश में मिली भारी सफलता के कारण सबकी नजर वहां की 80 सीटों पर रहेगी, पर दक्षिणी राज्यों पर भी उसी तरह नजर रहेगी, जिन्होंने दिखाया है कि राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों का मजबूत दखल होता है, खासकर तब, जब ये नीतियों से अपनी अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं। तमिलनाडु औद्योगिक उत्पादन केंद्र, कर्नाटक आईटी केंद्र और अविभाजित आंध्र प्रदेश विनिर्माण और आईटी के केंद्र के रूप में उभरा, जो उसके पिछले प्रदर्शन का सुबूत है। हिंदी और हिंदुत्व के प्रति भाजपा का जुनून सांस्कृतिक एवं राजनीतिक रूप से विविधतापूर्ण दक्षिण में बहुत कारगर नहीं हो सकता है।

अंतर्ध्वनि

>> दुन्या मिखाइल

बारूद व फूल की गंध घुली-मिली थी, कविता ने बचाई जान

जब मैं छोटी-सी बच्ची थी, तो एक दिन मेरे शिक्षक ने पूछा कि मैं क्या बनना चाहती हूं, तो मैंने जवाब दिया कि मैं नबी बनना चाहती हूं। मुझे लगा था कि एक बहुत ही प्रभावशाली पुस्तक लिखकर मैं ऐसा कर सकती हूं। वैसे भी मैं कविताएं लिखने के प्रति दिवानी थी। मैंने एक कविता लिखकर अपने एक दोस्त को भी उसके जन्मदिन पर उपहार में दी। बाद में मैं नबी बनने के बारे में भूल ही गई। जब मैंने बगदाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में ग्रेजुएट किया, तो मुझे बगदाद ऑब्जर्वर में पत्रकार के रूप में नौकरी मिल गई। मुझे लगता है कि पत्रकारिता के अनुभव ने कविता लिखने में भी मेरी मदद की। मेरा यह नहीं कहना है कि हर कवि को पत्रकारिता करनी ही चाहिए, लेकिन पत्रकारिता के गुणों का बेहतर इस्तेमाल कविता में किया जा सकता है। पत्रकारों को पता होता है कि खबरों को कहां से शुरू करें और कहां खत्म करें। वे अपनी खबरों के पीछे चुपचाप खड़े रहते हैं और मुझे लगता है कि यह गुण साहित्य में भी अच्छी तरह से काम करेगा। मैंने जीवन में पहली कहानी अपनी दादी के मुंह से सुनी थी। हमारे घर में किताबें नहीं थीं, लेकिन वह लोककथाएं सुनाया करती थीं, जो मुझे रोमांचित करती थीं। मैं उन कहानियों को अपनी नोटबुक में लिख लेती थी। मेरी दादी मुझे उन कहानियों के पीछे की नैतिक सीख के बारे में बताती थीं। इन चीजों ने साहित्य के प्रति मेरे मन में दिलचस्पी पैदा की। जब मैं बाईस वर्ष की थी, तब मेरी दादी और मेरे अब्बा, दोनों का देहांत हो गया। मैंने इराक में सिर्फ युद्ध ही नहीं देखा, बल्कि चाय के साथ कविता पर बातचीत का गवाह भी रही हूं। वहां बारूद और रजकी (एक प्रकार का फूल, जो सिर्फ इराक में ही होता है), की गंध घुली-मिली थी। मैं खुद को कवयित्री मानती हूं, क्योंकि कविता ने ही मेरी जान बचाई।

मशहूर इराकी-अमेरिकी कवयित्री

मंजिलें और भी हैं

>> संजीव पेडनेकर

इस पाठशाला में पशुओं से सीखें जीवन के सबक

उन दिनों मैं स्कूल में ही था। हमारे स्कूल में एक पशु विशेषज्ञ को पशुओं के बारे में बात करने के लिए आमंत्रित किया गया था। उन्होंने मुझसे एक मगरमच्छ को अपने कंधे पर रखने के लिए कहा। शुरू में मुझे डर लगा, लेकिन थोड़ी देर बाद मुझे अच्छा लगने लगा। मैं मगरमच्छ के शरीर पर हाथ फेर रहा था और मेरा भय दूर हो चुका था। इस तरह पशुओं से मेरे प्रेम की शुरुआत हुई। इसके बाद मैं स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई के दौरान अनेक पशु कल्याण एजेंसियों से जुड़ता चला गया और स्वैच्छिक कार्यकर्ता की तरह काम भी करने लगा। मैंने सरीसृप विज्ञान की पढ़ाई की, जिससे मुझे पशुओं के बारे में नई जानकारियां मिलीं। पशु कल्याण से जुड़ी संस्थाओं के साथ काम करते हुए मैं जान पाया कि हादसे का शिकार होने वाले पशुओं को बचाने का काम कितना संवेदनशील है। इसी पृष्ठभूमि के साथ मैंने प्राणी- पेट सैंक्चुरी (पालतु पशुओं का अभयारण्य) की स्थापना की। यह बंगलुरू में कनकपुरा रोड पर द आर्ट ऑफ लिविंग इंटरनेशनल सेंटर से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। असल में यह कोई चिड़ियाघर या अभयारण्य नहीं है, बल्कि ऐसे पशुओं का घर है, जिन्हें किसी हादसे या संकट से बाहर निकालकर यहां लाया गया है। हमने करीब एक एकड़ जमीन में चालीस पशुओं के साथ 2017 में इसकी शुरुआत की थी। पर्यावरणविद कार्तिक प्रभु सहित हमारी टीम में आज 16 और लोग हैं। हमारी सैंक्चुरी में आज तीन सौ जानवर हैं, जिनमें गधे, कुत्ते, खच्चर, सांप, खरगोश, बत्तख, भेड़ और बकरी आदि हैं। इसकी स्थापना इतनी आसान नहीं थी। पालतू जानवरों की इस सैंक्चुरी की स्थापना के लिए मैंने वित्तीय मदद के लिए अनेक लोगों से संपर्क किया था, मगर किसी ने इसमें दिलचस्पी नहीं दिखाई। मैं तब 27 वर्ष का था और किसी को मेरा काम गंभीर नहीं लग रहा था। आखिरकार मेरे परिजनों ने मुझे मेरा सपना पूरा करने के लिए वित्तीय मदद दी।

हम ऐसा क्लासरूम विकसित करना चाहते थे, जहां बच्चे पशुओं के बारे में जान सकें।

हम सब पशुओं से प्रेम करते हैं, इसके बावजूद लगता है कि हम पशुओं के बारे में बहुत कम जानते हैं। आज जो पीढ़ी बड़ी हो रही है, स्कूल में उस पर पढ़ाई का काफी बोझ लाद दिया जाता है। उन्हें पशुओं के बारे में कम जानकारियां होती हैं। उन्हें पशुओं को देखने-समझने और उनके साथ वक्त गुजारने के भी कम मौके मिलते हैं। अनेक बच्चे भेड़ और बकरी में फर्क नहीं कर पाते। कुछ लोग कह सकते हैं कि इससे क्या फर्क पड़ता है। लेकिन वास्तव में हमारा अस्तित्व पर्यावरण और पारिस्थितिकी पर टिका हुआ है। मनुष्य के अस्तित्व के लिए पशुओं की जरूरत है। प्रकृति और पशुओं से संपर्क और उनसे संबंधित जानकारियां बच्चों के विकास में सहायक हो सकती हैं। प्रकृति से बड़ा कोई और क्लासरूम नहीं हो सकता। हम ऐसा क्लासरूम विकसित करना चाहते थे, जहां बच्चे पशुओं के बारे में जान सकें, उनके साथ वक्त गुजार सकें। सरकारी स्कूल के बच्चों से यहां कोई शुल्क नहीं लिया जाता। निजी स्कूल के लिए हमने यहां शुल्क रखा हुआ है। यहां आने वाले बच्चों और पर्यटकों को हमारे विशेषज्ञ जानवरों के बारे में जानकारियां देते हैं। यहां आने वाले पर्यटक पशुओं को नहला सकते हैं, उन्हें चारा या भोजन खिला सकते हैं। यहां के हर जानवर की अपनी कहानी है, जिन्हें किसी संकट से बाहर निकालकर यहां लाया गया है। मेरा सपना है कि देश के हर हिस्से में ऐसा अभयारण्य होना चाहिए।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित

पाकिस्तान की साजिश समझिए

पाकिस्तान को यह सख्त संदेश देना चाहिए कि अगर वह कश्मीर में सीमा पार आतंकवाद को प्रायोजित करता है, तो भारत अपने तरीके से पलटवार करेगा। ऐसा करने पर ही दुनिया भारत के साथ खड़ी होगी और समर्थन देगी।

मारुफ रजा

लगता है, भारत की अन्य राजनीतिक चुनौतियों की तुलना में और कभी-कभी उससे भी अधिक पाकिस्तान का जिक्र और उससे निपटने के तरीके प्रधानमंत्री मोदी और उनकी चुनावी टीम के प्रचार अभियान का एक बड़ा हिस्सा है। इस बीच पाकिस्तान से आए दो प्रमुख बयान यहां सुर्खियों में रहेः पहला बयान पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान का है, जिसमें उन्होंने कथित तौर पर कहा है कि अगर मोदी की मौजूदा सरकार चुनाव जीत जाती है, तो भारत के साथ शांति स्थापित करने की ज्यादा संभावना रहेगी। और दूसरा बयान दिल्ली स्थित पाकिस्तान के निवर्तमान उच्चायुक्त सोहेल महमूद का है, जिन्होंने कहा कि इन चुनावों के बाद पाकिस्तान भारत से फिर रिश्ते सुधरने की उम्मीद करता है। पर इन बयानों का गहरा मतलब निकालने पर ही पाकिस्तान की साजिश समझ में आएगी।

पाकिस्तान की जानकारी रखने वाले एक पश्चिमी पर्यवेक्षक का मानना है कि एक वजह से पाकिस्तानी सेना भारत में सख्त नेतृत्व चाहती है, ताकि वह लंबे समय से जारी अपने रुख को बनाए रखे कि भारत से पाकिस्तान को खतरा है। इससे वहां के सैन्य प्रतिष्ठान को पाकिस्तान पर अपनी राजनीतिक-आर्थिक पकड़ बनाए रखने और वहां के बजट के ज्यादातर हिस्से पर कब्जा जमाने का मौका मिलेगा। भारत को बार-बार वार्ता का प्रस्ताव देते हुए हो सकता है कि इमरान खान पाकिस्तान के नए चेहरे के रूप में उभरना चाहते हों। पर यह मानना कठिन है कि भारत से लड़ने की पाकिस्तान की गहरी इच्छा को वह आसानी से बदल दें।

वास्तव में भारत की उपेक्षा ने पाकिस्तान को सबसे ज्यादा परेशान किया है, जैसे कि पठानकोट में एयर बेस पर हमले के बाद द्विपक्षीय वार्ता रद्द की गई।

पाकिस्तान का सैन्य-राजनीतिक नेतृत्व यह दिखाना चाहता है कि वह अतीत को पीछे छोड़कर भारत के साथ वार्ता करना चाहता है। ऐसे बयानों के जरिये पाकिस्तान अपनी एक जिम्मेदार परमाणु हथियार संपन्न राष्ट्र की छवि बनाना चाहता है और पश्चिम की आशंकाओं को दूर करते हुए यह बताना चाहता है कि भारत एक लड़ाकू पड़ोसी है। यह एक ऐसी रणनीति है, जो अतीत में काम कर सकती थी, पर भारत के हालिया कूटनीतिक प्रयासों की बदौलत पाकिस्तान की इस कहानी को अब कोई नहीं मानेगा।

हमारे सशस्त्र बल को अपने इस तकलीफदेह पड़ोसी से निपटने को लेकर कोई भ्रम नहीं है, लेकिन भारत के राजनयिकों ने मान लिया है कि अंततः भारत को पाकिस्तान से रिश्ते सुधारने की जरूरत होगी और यह जितनी जल्दी हो, उतना बेहतर! ये भारत के वे लोग हैं, जिन्होंने भारत की विभिन्न सरकारों को पाकिस्तान के साथ बातचीत करने के लिए मजबूर किया है।

आश्चर्य की बात है कि हमारा विदेश मंत्रालय पाकिस्तान की इस साजिश को क्यों नहीं समझ रहा है। भारत-पाक संबंधों पर वार्ता का असली नतीजा तभी मिलेगा, जब पाकिस्तान की सेना सार्वजनिक रूप से भारतीय नेतृत्व के साथ बातचीत में शामिल होगी। पर हमारे नेता हमेशा ऐसा करने से कतराते रहे हैं। वे मानते हैं कि हमें पाकिस्तान को लोकतांत्रिक प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में मदद करनी चाहिए। इससे पता चलता है कि हमारे नीति निर्माता कितने भोले हैं। पाकिस्तान की सत्ता की चाबी वहां की सेना के पास है।

इसलिए भारत के नीति निर्माताओं को सबसे पहले यह जानना चाहिए कि पाकिस्तान से रिश्ते बेहतर करने से उसे क्या लाभ हो सकते हैं। अगली बार अगर हम उससे बातचीत करते हैं, तो उसमें सेना को भी शामिल करना चाहिए और पाकिस्तान को सख्त संदेश देना चाहिए कि अगर वह कश्मीर में सीमा पार आतंकवाद को प्रायोजित करता है, तो भारत अपने तरीके से पलटवार करेगा। ऐसा करने पर ही दुनिया भारत के साथ खड़ी होगी और समर्थन देगी।

खुली खिड़की

जैव-विविधता का नुकसान

हाल के वर्षों में बढ़ते पर्यावरण संकट के कारण पूरी दुनिया में जैव-विविधता को नुकसान पहुंच रहा है। पिछले एक दशक में तितलियों की संख्या में 53 फीसदी की गिरावट आई है।

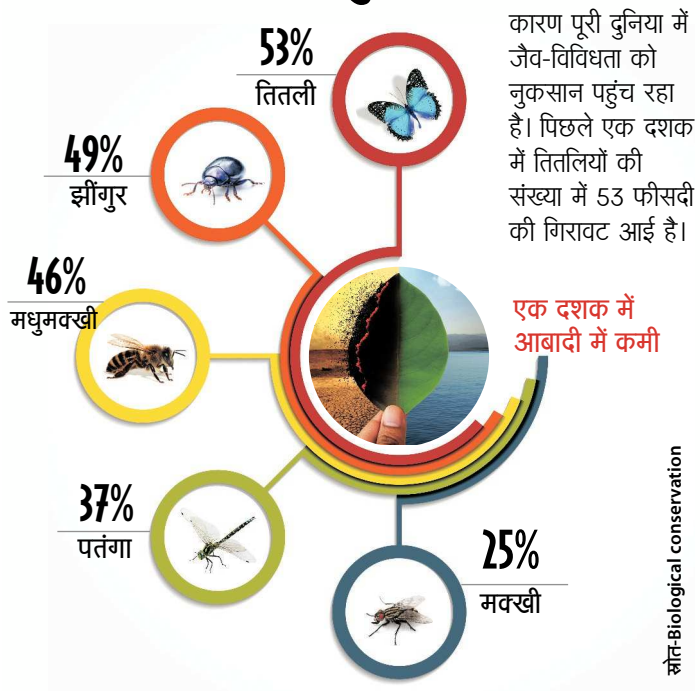

बुरा क्यों चाहूं?

सत्संग

संत मार्टिन लूथर ने धर्म के नाम पर प्रचलित अनेक रूढ़ियों के विरुद्ध जन जागरण अभियान चलाया। इससे चिढ़कर कुछ रूढ़िवादियों ने निराधार आरोप लगाकर उन्हें बदनाम करने का काम शुरू कर दिया। एक दिन संत लूथर के एक मित्र ने कहा, 'अच्छी बातों का प्रचार करें। पुरानी मान्यताओं पर प्रहार कर व्यर्थ ही अपना विरोध क्यों बढ़ा रहे हैं?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'मैं धर्म प्रचारक हूं। धर्म के नाम पर फैल रहे अधर्म रूपी पाप का मूक दर्शक बनकर भी तो मैं परमात्मा का विरोध सहन करूंगा। इससे अच्छा है कि इन गलत मार्ग पर चलने वालों का विरोध झेलूं, अंत में उन्हें ही चुप होना पड़ेगा।' जब संत लूथर को पाखंडियों ने ज्यादा सताना शुरू किया, तो एक शिष्य ने कहा, 'अब तो हद ही हो गई है। आपकी प्रार्थना भगवान भी सुनते हैं। क्यों न आप उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे इन पाखंडियों को दंडित करें। इतना ही नहीं, इनकी गलत शब्द उच्चारण करने वाली जीभ को लकवा मार जाए।' संत लूथर ने कहा, 'मैं प्रतिदिन भगवान से प्रार्थना करता हूं कि इन भ्रमित लोगों को सद्बुद्धि दो। उन्हें पाखंड के मार्ग से हटाकर सच्चे धर्म मार्ग पर चलने की प्रेरणा दो। यदि मैं उनका बुरा चाहूंगा और उन्हें शाप दूंगा, तो फिर उनमे और मुझमें अंतर ही क्या रहेगा?'

शिष्य अपने गुरु का विशाल हृदय देखकर हैरान रह गया।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

पत्नी का इंतजार और बूढ़े की सीख

यह कहानी एक भिखारी की है, जिसने समृद्ध युवक को जिंदगी का महत्वपूर्ण सबक सिखा दिया।

ओबेरॉय मॉल के सामने हर्ष अपनी गाड़ी में बैठा हुआ पत्नी नीता और बेटे रोहन का बहुत देर से इंतजार कर रहा था। उन्हें आने में अभी दस मिनट बाकी थे। खाली बैठे हुए हर्ष के मन में विचार आया कि बेकार बैठने से अच्छा है कि क्यों न अपनी गाड़ी ही साफ कर ली जाए। यह सोचकर हर्ष गाड़ी से बाहर निकला और अपनी गाड़ी साफ करने में जुट गया। कुछ दूरी पर एक भिखारी था। वह हर्ष की तरफ आ रहा था। तभी हर्ष की नजर उस बूढ़े भिखारी पर पड़ी। भिखारी की हालत ठीक नहीं लग रही थी। हर्ष यह समझ चुका था कि उसके पास खाना खाने के पैसे भी नहीं होंगे। ऐसा नहीं था कि हर्ष को भिखारियों से कोई दिक्कत थी, पर उस दिन हर्ष का उस भिखारी से बात करने का मन नहीं था। लेकिन वह हर्ष के पास नहीं आया, और न ही उससे कुछ बोला। वह भिखारी बस स्टॉप पर जाकर बैठ गया। हर्ष अब भी अपनी गाड़ी साफ करता रहा। अचानक हर्ष ने मुड़कर देखा और उसकी नजर उस भिखारी से मिल गई, जो अब भी उसकी ओर टकटकी लगाए देख रहा था। भिखारी ने कहा-'आपकी गाड़ी बहुत अच्छी है।' हर्ष ने हां में सिर हिला दिया। हर्ष हैरान था कि वह भिखारी अब भी कुछ मांग नहीं रहा। थोड़ी देर में हर्ष से रहा नहीं गया। उसने भिखारी से पूछा-'क्या आपको किसी मदद की जरूरत है?' उसके बाद जो कुछ भिखारी ने कहा, उसने हर्ष की जिंदगी बदल दी।

उसने कहा- 'हम सभी को किसी न किसी मदद की जरूरत है। है न?' यह सुनकर हर्ष स्तब्ध रह गया। हम कितने भी समृद्ध क्यों न हों जाएं, कितने भी बड़े आदमी क्यों न बन जाएं, फिर भी हम सभी को किसी न किसी मदद की जरूरत है। ठीक उसी तरह से, हम कितने भी कमजोर क्यों न हों, हम सब एक दूसरे की मदद कर सकते हैं।

हम एक-दूसरे की मदद से ही जीवन में आगे बढ़ते हैं।